International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

पूर्वोत्तर में विधानसभा चुनाव 2018 के चुनावी जनादेश का विश्लेषण

Dr. Ashok Khasa
Assistant Professor
Department of Public Administration
A.I.J.H.M.College, Rohtak (HR.)

शोध आलेख सार– वस्तुतः भारतीय संसदीय लोकतंत्र के इतिहास में पूर्वोत्तर राज्यों में भारतीय जनता पार्टी की राज्य सरकारों का बनना किसी चमत्कार से कम नहीं है। जहाँ 2018 से पहले भी तीन राज्यों में भारतीय जनता पार्टी और उसके सहयोगी काबिज हो चुके थे, अब तीन राज्यों में हुए विधानसभा चुनाव के बाद यह आंकड़ा छह पर पहुंच गया। यह प्रथम अवसर है जब 46 वर्ष बाद पूर्वोत्तर के सात राज्यों में से छह पर भारतीय जनता पार्टी व उसके सहयोगियों का कब्जा हो चुका है। वास्तव में 2018 में हुए तीन राज्यों के विधानसभा चुनावी परिणाम भारतीय जनता पार्टी के लिए एक वरदान सिद्ध हुए और त्रिपुरा में अकेले भारतीय जनता पार्टी ने पूर्ण बहुमत प्राप्त किया तथा 25 वर्षों से चले आ रहे वामदलों के शासन को ध्वस्त करके विजय पताका फहराई। यहाँ भारतीय जनता पार्टी गठबंधन ने 43 सीट जीतकर लोकसभा चुनाव 2019 की राह आसान कर दी। वर्ष 2013 में त्रिपुरा विधानसभा में भारतीय जनता पार्टी को केवल 1.5 प्रतिशत वोट मिले थे, वे अब 43 प्रतिशत हो गये। नागालैंड तथा मेघालय में भी भारतीय जनता पार्टी ने गठबंधन सरकार का निर्माण किया तथा पूर्वोत्तर की राज्य विधानसभाओं की राजनीति का नया अध्याय लिख दिया। प्रस्तुत शोध पत्र में पूर्वोत्तर के तीन राज्यों में वर्ष 2018 में हुए विधानसभा चुनाव के परिणामों का विश्लेषण किया गया है।

मूलशब्द– संसदीय लोकतंत्र, पूर्वोत्तर, विधानसभा चुनाव, भारतीय राजनीति, चुनावी जनादेश, वामपंथी दल।

भूमिका– लोकतंत्र की ये महत्वपूर्ण विशेषता होती है कि यहाँ जनता के हाथ में सत्ता की चाबी रहती है और वह समय आने पर सरकार को कोई भी चाबुक मार सकती है। त्रिपुरा में

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

वामपंथी दलों तथा अन्य राज्यों में कांग्रेस के साथ यही हुआ। एक समय ऐसा था जब पूर्वोत्तर के सातों राज्यों पर कांग्रेस का कब्जा था, परन्तु धीरे–धीरे कांग्रेस का जनाधार इस क्षेत्र से खिसकता गया और भारतीय जनता पार्टी का जनाधार बढता गया। अभी हाल ही में तीन राज्यों में हुए विधानसभा चुनाव के परिणामों ने यही सिद्ध कर दिया। त्रिपुरा विधानसभा में तो भारतीय जनता पार्टी ने अकेले ही बहुमत प्राप्त कर लिया तथा नागालैण्ड में वो बहुमत से तीन सीट दूर रह गई। जहाँ वर्ष 2013 में त्रिपुरा विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी की तरफ से खड़े किये गए 50 उम्मीदवारों में से 49 की जमानत जब्त हो गई थी, वहीं अब भारतीय जनता पार्टी गठबंधन को 50.50 प्रतिशत वोट प्राप्त हो गई। यह कोई आकस्मिक घटना नहीं है बल्कि पूर्वोत्तर की जागरूक जनता का वामपंथी दलों व कांग्रेस को करारा जवाब है।

वस्तुतः भारतीय जनता पार्टी के इतिहास पर दृष्टिपात करने से पता चलता है कि 1951 में श्यामा प्रसाद मुखर्जी द्वारा गठित जनसंघ से ही इसका जन्म हुआ तथा 1977 के लोकसभा चुनाव में जनसंघ की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इसके बाद जनसंघ बिखर गया और 1980 में भारतीय जनता पार्टी की स्थापना हुई। वर्ष 1984 में भारतीय जनता पार्टी ने अपना पहला लोकसभा का चुनाव लड़ा और इसे केवल दो सीटें प्राप्त हुई। चूंकि तीन बार अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी गठबंधन की सरकार भी बनी, परन्तु वर्ष 2014 में अकेले भारतीय जनता पार्टी ने 282 सीटें जीत ली। यह संसदीय लोकतंत्र के इतिहास में भारतीय जनता पार्टी के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जाती है। इसके बाद भारतीय जनता पार्टी ने धीरे–धीरे राज्यों की राजनीति में अपनी पकड़ मजबूत करनी शुरू की और उसके बाद देश के अधिकांश राज्यों पर भारतीय जनता पार्टी का अधिपत्य स्थापित हो गया।

पूर्वोत्तर के तीन राज्यों में विधानसभा चुनाव 2018 का जनादेश– इस वर्ष पूर्वोत्तर के तीन राज्यों त्रिपुरा, नागालैण्ड तथा मेघालय में विधानसभा चुनाव हुए तो त्रिपुरा में अकेले भारतीय जनता पार्टी को बहुमत मिल गया तथा नागालैण्ड व मेघालय में भी भारतीय जनता पार्टी ने

गठबंधन सरकार का निर्माण किया। चूंकि त्रिपुरा तथा मेघालय में एक–एक उम्मीदवार की मृत्यु होने के कारण केवल 59–59 सीटों पर मतदान हुआ तथा नागालैण्ड में भी एक उम्मीदवार निर्विरोध चुना गया। इस विधानसभा चुनाव के परिणाम इस प्रकार रहे–

तालिका –1 : त्रिपुरा विधानसभा चुनाव 2018 में दलीय स्थिति

क्रं.सं.	पार्टी का नाम	सीटें	2013 में सीटें	+/- सीटें
1	भारतीय जनता पार्टी गठबंधन	43	00	+43
2	मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी	16	49	–33
3	कांग्रेस	00	10	–10
4	अन्य	00	01	–01
	कुल	59	59	--

(स्रोत– दॉ हिन्दुस्तान टाईम्स, 4 मार्च 2018)

इस तालिका का विश्लेषण करने से स्पष्ट हो जाता है कि वर्ष 2013 में भारतीय जनता पार्टी को एक भी स्थान पर विजय प्राप्त नहीं हुई थी। इस बार त्रिपुरा में भारतीय जनता पार्टी ने 43 सीटें जीतने में कामयाबी पाई। इस राज्य में अकेले भारतीय जनता पार्टी ने 35 सीटें जीतकर 25 वर्ष से चले आ रहे वामदलों के किले को ध्वस्त कर दिया। यह पूर्वोत्तर राज्यों की राजनीति में भारतीय जनता पार्टी के काफी महत्वपूर्ण घटना मानी जाती है जो वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के लिए फायदेमंद सिद्ध होगी।

तालिका –2 : नागालैण्ड विधानसभा चुनाव 2018 में दलीय स्थिति

क्रं.सं.	पार्टी का नाम	सीटें	2013 में सीटें	+/- सीटें
1	भारतीय जनता पार्टी गठबंधन	12	01	+11
2	एन.पी.एफ	27	39	–12
3	कांग्रेस	00	08	–08

4	एन.डी.पी.पी	17	00	+17
5	एन.पी.पी.	02	00	+02
6	जनता दल (यू0)	01	01	—
7	अन्य	01	11	−10
	कुल	60	60	--

(स्रोत– दॉ हिन्दुस्तान टाईम्स, 4 मार्च 2018)

इस तालिका से स्पष्ट होता है कि इस चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को 12 सीटों पर, एन.डी.पी.पी. को 17 तथा एन.पी.एफ. को 27 सीटों पर जीत मिली। अन्य के खाते में भी 4 सीटें गई। पिछले चुनाव की तुलना में नागालैण्ड राज्य में भारतीय जनता पार्टी का जनाधार बढा और उसने नेफयु रियो के नेतृत्व में गठबंधन की सरकार बनाई।

तालिका –3 : मेघालय विधानसभा चुनाव 2018 में दलीय स्थिति

क्रं.सं.	पार्टी का नाम	सीटें	2013 में सीटें	+/- सीटें
1	भारतीय जनता पार्टी गठबंधन	02	00	+02
2	एन.पी.पी.	19	02	+17
3	कांग्रेस	21	29	−08
4	अन्य	17	29	−12
	कुल	59	60	--

(स्रोत– दॉ हिन्दुस्तान टाईम्स, 4 मार्च 2018)

इस तालिका से स्पष्ट होता है कि इस चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को दो सीटों का लाभ हुआ तथा कांग्रेस को आठ सीटों का नुकसान हुआ। एन.पी.पी को पिछले चुनाव की तुलना में 17 सीटें अधिक मिली। चुनाव आयोग से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार अन्य सीटों में एच.एस.पी.डी.पी को 2, यू.डी.पी को 6 तथा निर्दलीय को 5 सीटों पर विजय प्राप्त हुई। यहाँ

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

कोनराड संगमा के नेतृत्व में गठबंधन सरकार का निर्माण हुआ जिसमें भारतीय जनता पार्टी भी शामिल हुई।

चुनावी जनादेश का विश्लेषण– उपरोक्त तीनों विधानसभाओं के चुनावी जनादेश से स्पष्ट होता है कि इन राज्यों से कांग्रेस का सफाया हो गया और त्रिपुरा में अकेले भारतीय जनता पार्टी ने बहुमत प्राप्त किया। अन्य दो राज्यों में भी भारतीय जनता पार्टी गठबंधन की सरकार बनी। इन राज्यों में से नागालैण्ड में भी भारतीय जनता पार्टी की स्थिति पहले की तुलना में अधिक मजबूत हुई। यह प्रथम अवसर है जब 46 वर्ष के बाद पूर्वोत्तर के अधिकांश राज्यों में भारतीय जनता पार्टी गठबंधन की सरकारें बन चुकी हैं। पिछले 27 वर्ष में भारतीय जनता पार्टी देश के अधिकांश राज्यों पर कब्जा कर चुकी है। इस चुनावी जनादेश ने भारतीय जनता पार्टी में नरेन्द्र मोदी और अमित शाह की जोड़ी की धाक जमा दी है तथा भारतीय जनता पार्टी का हिन्दी क्षेत्र की पार्टी का ठप्पा हट गया है और उसकी पहचान अखिल भारतीय पहचान बन गई है, जिसका फायदा आगामी लोकसभा चुनाव 2019 में भारतीय जनता पार्टी को अवश्य मिलेगा। इस चुनाव ने पूर्वोत्तर से कांग्रेस का सफाया करके उसके भविष्य पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है। इस चुनाव में वामपंथी दलों के गढ त्रिपुरा में 'चलो पाल्टाई' अर्थात चलो बदलें का भारतीय जनता पार्टी का नारा सफल रहा।

वास्तव में इस चुनाव में पूर्वोत्तर की जनता ने बदलाव के लिए मतदान किया और मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के मजबूत किले को ध्वस्त करके एक बड़ा राजनैतिक संदेश दिया है जिससे भारतीय जनता पार्टी को 2019 की राह आसान लगती नजर आने लगी है। यह चुनाव संघ परिवार के लिए मील का पत्थर माना जाने लगा है तथा पूर्वोत्तर के राज्यों में जनता को नरेन्द्र मोदी की विकासपरक नीतियां पसन्द आने लगी हैं। चूंकि ये राज्य तो काफी छोटें हैं, परन्तु इस चुनावी जनादेश से निकला संदेश काफी बड़ा है।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

सारांश– वस्तुतः वर्ष 2018 में पूर्वोत्तर के तीन राज्यों में हुए विधानसभा चुनाव के परिणामों ने भारतीय जनता पार्टी को एक सुखद अहसास करवाया है, परन्तु इस क्षेत्र में अकेले त्रिपुरा में चुनावी परिणामों के तीन दिन के अन्दर लगभग 770 झड़पे हुई और मूर्तियां तोड़ने का सिलसिला भी शुरू हुआ जो राष्ट्रीय एकता और अखण्डता की दृष्टि से सभी राजनीतिक दलों के लिए एक चिन्ता का विषय माना जाये तथा इसके साथ–साथ 14 मार्च को घोषित यू0पी0 विधानसभा उप चुनाव में भारतीय जनता पार्टी द्वारा दोनों सीटें हारना तथा बिहार में एक लोकसभा तथा एक विधानसभा की सीट पर हारना भारतीय जनता पार्टी के भविष्य पर दाग अवश्य लगाता है। इस अवसर पर पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बैनर्जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि इस उपचुनाव के परिणाम इस बात का संकेत हैं कि भारतीय जनता पार्टी की जीत का सफर समाप्त होने वाला है। अभी हाल ही में भारतीय जनता पार्टी के सहयोगी दल टी.डी.पी. ने भी अलग होने की घोषणा कर दी हैं। अतः भारतीय जनता पार्टी को भावी रणनीति पर कार्य करने की महती आवश्यकता है। इस बदलते चुनावी वातावरण में भारतीय जनता पार्टी को क्षेत्रीय सहयोग की नीति पर काम करके वर्ष 2019 में होने वाले लोकसभा चुनाव पर ध्यान केन्द्रित करना अपेक्षित है। उसे इस बात का भी ध्यान रखना पड़ेगा कि उसके विरूद्ध कांग्रेस तथा अन्य दल एकजुट होकर उसे चुनौती दे सकते हैं।

सन्दर्भ सूची–

1. **दैनिक भास्कर**, रोहतक, 4 मार्च 2018.
2. **अमर उजाला**, नोएडा, 4 मार्च 2018.
3. **हरिभूमि**, रोहतक, 5 मार्च 2018.
4. **दैनिक ट्रिब्यून**, गुरूग्राम, 15 मार्च 2018.
5. **दैनिक भास्कर**, रोहतक, 6 मार्च 2018.
6- **भारतीय निर्वाचन आयोग की रिपोर्टें, वर्ष 2013 तथा 2018.**